

# डॉ. डेविड इमानुएल, सत्र 4, निर्गमन भजन 106

© 2024 डेविड इमानुएल और टेड हिल्डेब्रांट

यह निर्गमन स्तोत्रों पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड इमानुएल हैं। यह सत्र संख्या चार, भजन 106, अंतराल में खड़ा है।

ठीक है। अब हम चौथे भजन, भजन 106 पर आते हैं। हमने अभी भजन 105 को देखा। मैंने इसका शीर्षक दिया है, अंतराल में खड़ा होना।

आप देखेंगे कि क्यों, क्योंकि स्तोत्र का संदेश काफी हद तक बाइबिल संबंधी मध्यस्थता की ओर उन्मुख है। लेकिन जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे हम इसे देखेंगे। स्तोत्र एक विलाप है।

हमने इसे अभी तक नहीं देखा है, न तो भजन 78 में, न ही भजन 105 या 136 में। यह एक विलाप है जो हरमन गंकल के अनुसार शैलियों में से एक है। तो, यह एक भजन है जिसमें भजनकार या इसके लेखन के समय लोग संकट के दौर में थे और वे मदद के लिए भगवान को पुकार रहे हैं।

इसलिए, उन्हें विभिन्न तरीकों से अपने संकट का वर्णन करना पड़ता है। तो, हम एक्सोडस रूपांकन को अब तक अलग-अलग संदर्भों में, ज्ञान के संदर्भ में, धार्मिक संदर्भ में, प्रशंसा के संदर्भ में उपयोग करते हुए देखते हैं, और अब यह एक विलाप में है। एक ही निर्गमन कहानी, इसके विभिन्न पहलुओं को बहुत अलग उद्देश्यों के लिए लिया और उपयोग किया गया है।

मैंने पहले भी देखा है कि भजन एक दूसरे को आकर्षित करते हैं। तो, हमारे पास भजन 105 है जिसके तुरंत बाद भजन 106 है। सिर्फ इसलिए कि वे दोनों निर्गमन स्तोत्र हैं, यह आसान है, अक्सर ऐसा होता है जब मैं इन निर्गमन स्तोत्रों के बारे में लोगों से बात करता हूँ, तो उन्हें मूल रूप से यह महसूस होता है कि वे सभी एक जैसे हैं।

उनमें निर्गमन सामग्री शामिल है और उन्हें एक गायन, एक ऐतिहासिक गायन कहा जाता है। उनका मानना है कि वहाँ कुछ निर्गमन के टुकड़े हैं जो सभी एक जैसे हैं। लेकिन जैसा कि हम उन्हें देखते हैं, मुझे उम्मीद है कि आप अब महसूस करने लगेंगे कि वे अविश्वसनीय रूप से अद्वितीय हैं।

प्रत्येक भजनकार ने निर्गमन को विशेष रूप से विवरण के अनुसार और एक कार्यक्रम के अनुसार फिर से लिखा है जिसे वह बढ़ावा देना चाहता है। इसलिए, लोग जो सोचते हैं उसके विपरीत वे बहुत अनोखे हैं। एक बड़ा अंतर वह विरोधाभास है जो हमारे यहां है।

पिछले स्तोत्र में, सब कुछ बिल्कुल अद्भुत था। वहां कुछ भी नकारात्मक नहीं था। लेकिन इस स्तोत्र में, हम देखेंगे, विशेष रूप से उसी अवधि को कवर करते हुए, रेगिस्तानी अवधि को कवर करते हुए, हम बिल्कुल विपरीत देखेंगे।

इज़राइल की हर चीज़ के गुलाबी और अद्भुत होने के बजाय, हम विद्रोह और पाप की ओर उस मॉडल की कमी की कहानियाँ देखेंगे जिसकी मांग ईश्वर और ईश्वर और मूसा दोनों लोगों से कर रहे थे। इसका दायरा समुद्र पार करने से लेकर निर्वासन तक जाता है। इसलिए इब्राहीम की तरह जाने के बजाय, जैसे कि भजन 105 वादा किए गए देश की ओर था, हम एक ओवरलैप के साथ जाते हैं।

लेकिन यह स्तोत्र आगे बढ़ता है और अस्पष्ट शब्दों में ही सही, राजशाही के काल के बारे में बताता है। राजशाही से ठीक पहले, भजन 78 में भी हमारे पास कुछ राजशाही वर्णन थे, लेकिन यह उससे थोड़ा संबंधित है। यहां हमारे पास इसका एक और स्वाद है।

लेकिन एक बार फिर, इसका कोई विवरण नहीं है। हम राजाओं के पापों में नहीं जाते। हम राजशाही के युग के दौरान इज़राइल के पापों में किसी भी गहराई या विस्तार में नहीं जाते हैं।

इस स्तोत्र में हमें कुछ बहुत ही अनोखा भी देखने को मिलेगा। मैंने कहा कि वे सभी एक जैसे नहीं हैं, लेकिन हम सक्रिय पात्र देखेंगे। हम मूसा और फिनीस जैसे व्यक्तियों को देखेंगे।

हम इब्राहीम को देखेंगे। हम इन लोगों को साहित्यिक दृष्टि से सक्रिय होते देखेंगे। ये जटिल पात्र या गोल पात्र भी होंगे।

यह कुछ ऐसा है जिसे हमने ज्यादा नहीं देखा है। हमारे पास मूसा और हारून के प्रति केवल दिखावटी सेवा और विद्रोह की कहानियाँ हैं। लेकिन यहाँ ऐसा हो जाता है कि लोग अधिक स्पष्ट, अधिक सक्रिय हो जाते हैं, और हम देखेंगे कि भगवान के धार्मिक कार्यों की तुलना में उनके कार्य बहुत अधिक पापपूर्ण हैं।

ठीले साहित्यिक स्रोत हैं। फिर, हिब्रू और अंग्रेजी के बीच अंतर के कारण मैं उतने अंतर्पाठीय कार्यों में प्रवेश नहीं कर सकता जितना मैं करना चाहता हूँ। लेकिन पाठों में निश्चित रूप से स्पष्ट संकेत हैं और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे हम उनमें से कुछ को देखेंगे।

इस स्तोत्र में एक और बात जो बहुत, बहुत खास है, वह यह है कि यह किसी व्यक्ति की इकबालिया प्रार्थना के इर्द-गिर्द केंद्रित है या बनाई गई है। इस स्तोत्र में मैं, मैं, स्वयं की धारणा बहुत अधिक स्पष्ट है और हमारे पास किसी भी अन्य निर्गमन स्तोत्र में ऐसा नहीं है। इसलिए, जब हम इन भजनों के माध्यम से काम करते हैं, तो इसे याद रखना बहुत महत्वपूर्ण है।

हाँ, उन सभी में निर्गमन है, लेकिन वे सभी एक दूसरे से अविश्वसनीय रूप से भिन्न हैं। मतभेदों को पहचानने और मतभेदों की सराहना करने से आपको व्यक्तिगत भजनों की सराहना करने में मदद मिलती है। मैं यहां डेटिंग भजनों के बारे में कुछ शब्द कहना चाहता हूँ।

अब तक, मैंने इसका उल्लेख नहीं किया है। इसीलिए मैं भजन 106 से शुरुआत करना चाहता हूँ। मैंने अभी तक इसका उल्लेख नहीं किया है क्योंकि भजनों का डेटिंग करना आम तौर पर बहुत कठिन है।

भजन या किसी बाइबिल साहित्य जैसी रचनाओं की डेटिंग करते समय, हम आम तौर पर डेटा योग्य व्यक्तियों, डेटा योग्य घटनाओं या डेटा योग्य स्थानों की तलाश करते हैं। एक बार जब हम उन्हें ढूँढ लेते हैं, मान लीजिए, कोई विशेष व्यक्ति था जिसका उल्लेख किसी विशेष समय में किया गया है, जिसके बारे में हम जानते हैं कि वह एक निश्चित युग में रहता था, तो हम उस विशेष व्यक्ति के संबंध में भजन की तारीख बता सकते हैं। तो सामान्यतः हम यही करते हैं।

स्तोत्रों में उनकी प्रकृति के कारण, उनकी प्रकृति कविता होने के कारण और कई बार उनके परिवेश और व्यक्तियों के संबंध में बहुत विशिष्ट नहीं होने के कारण, आम तौर पर बोलना उनके लिए अविश्वसनीय रूप से कठिन हो जाता है। लेकिन मुझे लगता है कि इस विशेष भजन के बारे में हमें पता है कि यह वास्तव में कब लिखा गया था। जब हम भजनों की तिथि निर्धारित करने का प्रयास करते हैं, तो हम मूल रूप से तीन युगों में भजनों का पता लगाने का प्रयास करते हैं।

अधिकांश भाग के लिए, यह बाइबिल साहित्य है। हमारे यहां पूर्व-राजशाही है, पूर्व-राजशाही नहीं, क्षमा करें, मान लीजिए कि पूर्व-निर्वासन है। निर्वासन से पहले, हमारे पास निर्वासन है और हमारे पास निर्वासन के बाद है।

यह लगभग 587 या निर्वासन के दौरान और उसके 70 साल बाद था। इसलिए जब हम बाइबिल साहित्य की तारीख जानने की कोशिश कर रहे होते हैं, तो आमतौर पर हम निर्वासन से पहले के युग के बारे में सोचते हैं, हम राजतंत्रीय युग के बारे में सोचते हैं या निर्वासन के दौरान लिखी गई किसी चीज़ के बारे में सोचते हैं या निर्वासन के बाद के युग के दौरान लिखी गई किसी चीज़ के बारे में सोचते हैं। हालाँकि हम यही सब करने का प्रयास करते हैं।

इससे अधिक कुछ भी वास्तव में विचित्र है। हम देख या सोच नहीं सकते, ठीक है, हाँ, यह भजन 794 या 798 में लिखा गया था। वास्तव में ऐसा होने वाला नहीं है।

हम इसे चाहते हैं, लेकिन हमारे पास उनमें से अधिकांश के लिए एक सभ्य संदर्भ ढांचा, एक सटीक संदर्भ ढांचा नहीं है। तो, ऐसा कहने के साथ, हम संभवतः इस भजन, भजन 106 को निर्वासन में रख सकते हैं। निर्वासन छोटा लग सकता है, लेकिन हम निर्वासन की 70 वर्ष की अवधि देख रहे हैं।

यह एक छोटी खिड़की की तरह लगता है, लेकिन वे अक्सर बहुत स्पष्ट सुराग होते हैं कि इस अवधि के दौरान कुछ लिखा गया था। इस स्तोत्र के लिए, हमें यहां यह श्लोक मिला है, अंतिम श्लोक, स्तुतिगान के अलावा, हे भगवान हमारे भगवान, हमें बचाएं और हमें राष्ट्रों के बीच से इकट्ठा करें। यहाँ यह कथन, न केवल मैं, बल्कि बहुत से विद्वान सहमत हैं, संभवतः 587 में निर्वासन के दौरान लिखा गया था।

अब एक मामला बनाया जा सकता है और आप बहस कर सकते हैं और कह सकते हैं, शायद यह अन्य निर्वासितों के बारे में बात कर रहा है और इसकी संभावना है। लेकिन इन सबके बावजूद, जब आप स्तोत्र में शामिल इतिहास को देखते हैं, जब आप स्तोत्र की भाषा को देखते हैं, तो मुझे लगता है कि यह मान लेना काफी सुरक्षित है कि यह निर्वासन में एक मध्यस्थता प्रार्थना के

रूप में लिखा गया था। अब इसे उस फ़ंक्शन में उपयोग करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि मुझे दृढ़ता से संदेह होगा कि वे इसकी उत्पत्ति थे।

यदि आप बेबीलोन की नदियों के किनारे भजन 137 जैसे भजन के बारे में सोचते हैं, जो एक और भजन है, जो फिर से एक निर्वासन सेटिंग को इंगित करता प्रतीत होता है। हमेशा एक तर्क होता है जो कहता है, हां, लेकिन यह हो सकता था, और यह हमेशा हो सकता था, लेकिन फिर भी संभावना यह है कि हम एक विदेशी सेटिंग से निपट रहे हैं। तो संरचना, याद रखने के लिए एक परिचयात्मक कॉल, हम इसे और अधिक विस्तार से देखेंगे, जो कि भजन के लिए एक परिचय की तरह है।

फिर हमारे पास समुद्र में परमेश्वर के उद्धार का यह मामला है। यह भजन के शिखर के रूप में कार्य करता है, एक उच्च बिंदु, यदि आप चाहें, तो आज्ञाकारिता के संबंध में, भगवान की इच्छा का पालन करने के संबंध में, समुद्र में भगवान की मुक्ति और इज़राइल की सही प्रतिक्रिया के संबंध में। इस बिंदु से आगे की हर चीज़ भगवान की सेवा की गुणवत्ता के संबंध में गिरावट है।

इसके बाद जो कुछ भी हुआ वह नैतिक पतन है। इस्राएली स्वयं को ईश्वर से दूर, विद्रोह करते, पाप करते और बार-बार उसमें वृद्धि करते हुए पाते हैं। लेकिन यह सब समुद्र में इस्राएलियों को छुड़ाने की परमेश्वर की इस बड़ी घटना के बाद शुरू होता है।

तो यह शुरू होता है, वे समुद्र में छुटकारा भूल जाते हैं और वे शिकायत करना शुरू कर देते हैं। फिर हमें नियुक्त नेताओं से ईर्ष्या होती है। यह तब होता है जब कोरह, अबीराम और दातान मूसा के विरुद्ध शिकायत करते हैं।

तो, हमारे पास आगे पाप और विद्रोह है। फिर हमारे पास सिनाई में मूसा की मध्यस्थता है। तो हम पर सोने के बछड़े का पाप है।

यह बहुत दिलचस्प है क्योंकि अब हमारे पास मूसा, एक मानव आकृति है, जो कुछ सकारात्मक कर रहा है, कुछ सक्रिय और सकारात्मक कर रहा है। वह अंतराल में खड़ा है और वह इज़राइल के लोगों की ओर से सफलतापूर्वक हस्तक्षेप करता है। तो यह सचमुच महत्वपूर्ण है।

यह पहली बार है जब हमने इसे किसी भजन में देखा है। तो, हमें इस बात पर ध्यान देना होगा कि इसे यहां क्यों शामिल किया जा रहा है? इसका महत्व क्या है? इसका यहां क्या महत्व है? फिर हमें भूमि की अस्वीकृति मिली, कादेश में एक और रेगिस्तान, रेगिस्तान में एक और घटना घटी। फिर हमें बाल पोर में पाप मिला है जिसमें फिनीस खड़ा है और वह मूसा के समान ही न्याय को टालता है।

फिनीस, हमने कभी भी किसी अन्य भजन में उसका उल्लेख नहीं सुना है। हम जानते हैं कि मूसा वहाँ था, लेकिन फिनीस को उसके कार्य के कारण इस भजन में बहुत ऊंचा स्थान प्राप्त है। फिर से सोचो, भजन 78, किसी का उल्लेख नहीं किया गया था।

अंत में केवल डेविड ही था। रेगिस्तानी परिदृश्य में किसी भी व्यक्ति का उल्लेख नहीं किया गया था। भजन 136 के साथ भी ऐसा ही और भजन 105 के साथ भी।

मूसा और डेविड का उल्लेख ईश्वर के सेवकों के रूप में किया गया है, लेकिन बस इतना ही। वे सक्रिय रूप से ऐसा कुछ भी नहीं करते जिसे सकारात्मक माना जाए या किसी तरह से धार्मिक माना जाए। लेकिन यह भजन उस संबंध में बहुत, बहुत अलग है।

फिर 32 और 33 में इस्राएलियों ने मूसा से पाप करवाया। यह मई मेरिबा में है, मेरिबा का जल जहां मूसा, जैसा कि संख्याओं में कहा जाता है, चट्टान पर प्रहार करके भगवान के नाम का सम्मान करने में विफल रहता है। इस बात को लेकर काफी रहस्य है कि उसने वास्तव में वहां क्या गलत किया था, लेकिन इसे यहां याद किया गया है और ऐसा लगता है कि इसके लिए मूसा से ज्यादा इस्राएलियों को दोषी ठहराया गया है।

फिर हमारे यहां इन छंदों में पाप का एक सामान्य चक्र जैसा कुछ है। हम इसके बारे में थोड़ी देर में बात करेंगे, लेकिन वास्तव में कुछ खास नहीं बताया गया है। भजनहार वास्तव में इन विशेष स्थानों में क्या संदर्भित कर रहा था, उससे संबंधित बाइबिल ग्रंथों को ढूंढना या पहचानना मुश्किल है।

अंत में, अंतिम कविता राष्ट्रीय मुक्ति के लिए एक प्रार्थना है। फिर हमारे पास एक स्तुतिगान है। अब मैं इस स्तुतिगान के बारे में ज्यादा बात नहीं करने जा रहा हूँ।

चाहे यह भजन के लिए जैविक है या नहीं, थोड़ा सा विवाद उत्पन्न होता है। बहुत से लोग, जिनमें मैं भी शामिल हूँ, यह महसूस नहीं करते कि यह वास्तव में भजन के लिए जैविक है, लेकिन यह उन प्रशस्तियों का हिस्सा है जिन्हें हम देखते हैं जिन्हें भजन की पांच पुस्तकों को बनाने के लिए कुछ पुस्तकों में जोड़ा गया है। तो आइए यहां याद रखने के लिए परिचयात्मक कॉल के साथ शुरुआत करें।

अब यहां मैंने पहले बताया था, आप इसे स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। आपका यह जोर व्यक्तियों पर, एक व्यक्ति पर है। मुझे स्मरण करो, कि मैं समृद्धि देखूँ, और आनन्दित होऊँ।

तो, यह बहुत ही व्यक्तिगत पहलू है। हम बाद में देखेंगे कि यह क्यों महत्वपूर्ण है, लेकिन स्तोत्र का वह निजी पहलू इसे अद्वितीय बनाता है। हमारे पास किसी अन्य निर्गमन स्तोत्र में ऐसा नहीं है।

आपको कई अर्थों में समुदाय की भी पहचान है। हम यहाँ श्लोक छह में आये हैं, हमने अपने पिताओं की तरह पाप किया है। हमने अधर्म किया है।

हमने दुष्टतापूर्ण व्यवहार किया है। अब मैं यहां कहता हूँ कि यह फसह का उलटफेर है। उससे मेरा मतलब क्या है? यहां मैं फसह के उस पहलू का जिक्र कर रहा हूँ, जिसके तहत जो लोग फसह के भोजन के लिए बैठते हैं, उनका विचार यह है कि भोजन में भाग लेने वाला हर व्यक्ति मिस्र से पलायन में भाग लेता है।

ऐसा लग रहा है मानों हम वहीं खाना खा रहे हों। यह कुछ ऐसा है जो पीढ़ियों से पीढ़ियों तक किया जाता रहा है। ऐसा लगता है जैसे आप वहां हैं।

तो, आप उसी भोजन में भाग ले रहे हैं जो मूल निर्गमन पीढ़ी ने लिया था। यह एक तरह से उलटफेर की तरह है क्योंकि हमारे पास एक भजनकार है जो शायद 587, 586, 585, कभी भी निर्वासन में बैठा है। परन्तु वह बैठा है और कहता है, हम ने अपने पुरखाओं के समान पाप किया है।

हमने अधर्म किया है। हमने दुष्टतापूर्ण व्यवहार किया है। तो वह इसी प्रकार कह रहा है कि फसल में जो लोग भोजन करते हैं, उन्होंने निर्गमन में भाग लिया है।

वह कह रहा है कि मैं भी अपने बाप-दादों के पापों में भागीदार हूँ। मैं भी उतना ही दोषी हूँ जितना वे हैं। इसलिए, वह यह कहकर खुद को उनसे अलग नहीं कर रहा है कि वे सभी दुष्ट हैं, लेकिन वह अपने पूर्वजों की बहुत सारी ज़िम्मेदारियों को मानता है और स्वीकार करता है।

ऐसा ही कुछ हमें डेनियल की किताब में भी दिखता है। जब दानियेल इस्राएल के लिये मध्यस्थता करता है, तो वह कहता है, हमने पाप किया है। डेनियल का वास्तव में उन सभी चीज़ों से कोई लेना-देना नहीं था जो निर्वासन का कारण बनीं।

वह एक बच्चा था और वह बेबीलोन में बड़ा हुआ, लेकिन फिर भी, उसकी प्रार्थना के हिस्से के रूप में, उसे इस प्रार्थना का मालिक होना पड़ता है और कहता है, हां, मैं राष्ट्र का हिस्सा हूँ। हालाँकि मैं वहाँ नहीं था, फिर भी मुझ पर कुछ दोष है और मैं खुद को इससे पूरी तरह अलग नहीं कर सकता। तो इसमें हम जो देखते हैं वह एक व्यक्ति है जो राष्ट्र के लिए मध्यस्थता कर रहा है।

एक व्यक्ति राष्ट्र की ओर से प्रार्थना कर रहा है, खुद को अपने पापों से अलग नहीं कर रहा है, बल्कि इसके हिस्से के रूप में हस्तक्षेप कर रहा है। यह विचार, यह धारणा बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बताती है, यह समझाने में मदद करती है कि वह भजन के भीतर कुछ घटनाओं को क्यों शामिल करता है। तो, जब समुद्र फट जाता है तो हमें छुटकारा मिलता है।

हमारे पास मिस्र के लिए शत्रु, घृणा, शत्रु आदि अनेक पर्यायवाची शब्द हैं। मिस्र का उल्लेख एक बार हुआ है, लेकिन हमारे पास एक रूपात्मक संकेत भी है। हमारे पास एक दिलचस्प वाक्यांश है जिसका उपयोग किया जाता है, मित्ज़ारव ।

यदि मैं इसे पहले हिब्रू में लिखूँ, तो मैं इसे हिब्रू में कैसे लिखूँ? मित्ज़ारव , अपने दुश्मन से। यह हिब्रू शब्द मिट्ज़रायिम के समान है । उम्मीद है कि आप यहां इनमें से कुछ अक्षरों के बीच समानताएं देख सकते हैं।

तो, आपके पास इजराइल के लिए यह चतुर संकेत है, लेकिन आपके पास दुश्मन, नफरत, शत्रु, ये कई पर्यायवाची शब्द भी हैं। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि जितना भजनहार मिस्र से मुक्ति को याद कर रहा है, उतना ही वह अपने शत्रुओं, नफरत करने वालों और विरोधियों से मुक्ति की ओर भी संकेत कर रहा है क्योंकि वह बेबीलोन में है। वह सोच रहा है कि जिस तरह से आप उन

इस्राएलियों को मिस्र से बचा सकते हैं, उसी तरह आप हमें हमारे दुश्मनों, नफरत करने वालों और विरोधियों से भी बचा सकते हैं, जो प्रभावी रूप से बेबीलोनियाई हैं।

इसलिए, समुद्र में मुक्ति के साथ हमारी सकारात्मक शुरुआत हुई है और सब कुछ अद्भुत है। इन छंदों में हम एक काव्यात्मक परिवर्तन देखते हैं, जिसमें कहा गया है, समुद्र को डांटा गया है। अब निर्गमन की पुस्तक में ऐसा नहीं होता है, लेकिन जब हम समुद्र की फटकार के बारे में बात कर रहे हैं, तो हम वास्तव में सृजन शब्दावली का उपयोग करना शुरू कर रहे हैं।

हम प्राचीन सृजन मिथकों के समय में सोच रहे हैं जिसमें जब भगवान ने दुनिया बनाई, तो पहली चीज जो उन्हें करनी थी वह किसी तरह से पानी को शांत करना था और वास्तव में अपना काम शुरू करने के लिए उन्हें डांटना और नियंत्रित करना था। अब इसके अन्य संबंध भी हैं, लेकिन मुझे यकीन है कि अन्य वीडियो में इसका खुलासा होगा। इसलिए मैं अभी इसमें नहीं जाऊंगा, लेकिन फिर भी समुद्र के विभाजन का वर्णन करने के लिए यहां सृजन की कल्पना खींची जा रही है।

और यह सिर्फ यहीं तक नहीं है। हम अक्सर निर्गमन को वैसा ही पाते हैं जैसा वह अन्य ग्रंथों में प्रकट होता है, जैसा वह यशायाह में प्रकट होता है। आप पाएंगे कि जिस भाषा का उपयोग अक्सर सृष्टि का वर्णन करने के लिए किया जाता है, उसका उपयोग लाल सागर में पानी के विभाजन और विखंडन का वर्णन करने के लिए किया जा रहा है।

तो, यह सामान्य है, भले ही यह वास्तव में पहली बार है जब हम वीडियो की इस श्रृंखला में इसका सामना कर रहे हैं। मन्ना और बटेर की घटना, समुद्र में इस महान चमत्कार के बाद, सब कुछ टुकड़े-टुकड़े हो जाता है। वे उसके कार्यों को जल्दी भूल जाते हैं।

उन्होंने मूल रूप से ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया और उन्होंने शिकायत करना शुरू कर दिया। वह ईश्वर जिसने समुद्र को विभाजित किया और हमें पार लाया, अब अचानक उसकी शक्ति समाप्त हो गई है। क्या चल रहा है? और वे शिकायत करने लगते हैं।

यहां संकेत स्पष्ट रूप से संख्या 11 और बटेर के प्रावधान की ओर है। हमारे पास यह पाठ यहीं है, लेकिन उन्होंने तीव्रता से लालसा की, जिसका अनुवाद लालची इच्छाओं के रूप में किया गया है। अब यह तो बस मेरी एक पालतू चिढ़ है, जो घटित होगी।

हम इसके बारे में फिर से बात करेंगे, मुझे यकीन है। ऐसा तब होता है जब एक भजनकार किसी बाइबिल पाठ की ओर संकेत करता है, तो वह आम तौर पर जो करता है वह यह है कि वह बाइबिल पाठ से एक अद्वितीय वाक्यांश लेता है और वह इसे सीधे अपनी रचना में रखता है ताकि उसके पाठक, जब वे उसका पाठ पढ़ें, तो उसकी ओर आकर्षित हों। अन्य पाठ. मेरे लिए, यदि भजनहार ने अपने शब्दों को सटीक बनाने में इतना समय और ऊर्जा लगाई है, तो हमारे अंग्रेजी अनुवादक बिल्कुल वैसा ही क्यों नहीं कर सकते? यह एक पालतू जानवर है।

मैं अनुवाद का महत्व समझता हूँ। मैं हर जगह अनुवादों की सराहना करता हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि यह पाठ के प्रति लगभग हिंसा प्रतीत होती है जब अंग्रेजी अनुवादक इस बात की सराहना

नहीं करता कि भजनकार क्या कर रहा है या बाइबिल का व्याख्याकार क्या कर रहा है। लेकिन फिर भी, चलो अभी इसे यहीं छोड़ दें।

यह वही वाक्यांश है जो हमें यहां नीचे इस पाठ को इससे जोड़ता हुआ मिलता है। यह संख्या 11 का संकेत है, लेकिन एक अजीब तरह का जोड़ है, उन्होंने उसकी सलाह की प्रतीक्षा नहीं की, जैसा कि हम देखते हैं। खैर, पाठ में, संख्या पाठ में ऐसा कुछ भी नहीं है, जो यह दर्शाता हो कि अधीरता की कोई डिग्री है।

इसलिए, हम नहीं जानते कि यह कहां से आता है। क्या यह एक और परंपरा है जिसे भजनहार शामिल करने की कोशिश कर रहा है या यह कैद में बैठकर अपने आस-पास की स्थिति का वर्णन करने वाली उसकी हताशा का हिस्सा है? धैर्य की कमी यहां एक समस्या थी। वह इसे डाल रहा है और शायद वह अपने समुदाय से बात कर रहा है और कह रहा है, हमें उसकी सलाह का भी इंतजार करना होगा।

तो, यह एक अजीब जोड़ है। आप केवल यह मान सकते हैं कि यह स्वयं लेखक के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा होगा। 16 से 18, अब हमें वह ईर्ष्या है जो दातान और अबीराम से उत्पन्न होती है।

वे मूसा के विरुद्ध उठकर कहते हैं, हे परमेश्वर की प्रजा पवित्र है। आप क्या कर रहे हो? आप अपने लिए नेतृत्व क्यों थोप रहे हैं? वह मूसा के विरुद्ध एक कंपनी खड़ी करता है। संख्या 16 में तीन व्यक्ति मूसा और हारून के विरुद्ध खड़े होते हैं।

भजन उसी सज़ा की याद दिलाता है जिसमें पृथ्वी खुल गई और उन्हें निगल गई और आग ने उनके साथियों को भी भस्म कर दिया। तो, यह दिलचस्प है कि यह स्पष्ट है कि भजनहार के पास कुछ बहुत ही समान है, कम से कम हमारे पेंटाटेच में जो है और वह उसका उपयोग कर रहा है। इसलिए, वह उसी सज़ा को कहते हैं, लेकिन यह एक बहुत ही दिलचस्प बदलाव है, जिसे हम देखते हैं।

यह विरोधियों में से एक की चूक है। हमारे पास कोरह, दातान और अबीराम हैं। भजन 106 में, हमारे पास सिर्फ दातान और अबीराम हैं।

कोरह का क्या होगा? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका सामना कई विशेषज्ञों को करना पड़ा है। इसके लिए हमारे पास कुछ स्पष्टीकरण हो सकते हैं। उनमें से एक बस यह है कि भजनकार कोला में, काव्यात्मक कोला में सब कुछ संतुलित रखने की कोशिश कर रहा था।

इसलिए, तीसरे नाम के जुड़ने से चीजें गड़बड़ा सकती हैं। लेकिन दूसरी व्याख्या बस यह हो सकती है कि जिस कोरह को हम जानते हैं वह वह व्यक्ति था जिसने प्रसिद्ध भजन विद्यालय, भजनशास्त्र की स्थापना की थी। तो, यह भी हो सकता है कि भजनहार अपने नाम की रक्षा करना चाहता है और इसलिए अपना नाम इससे हटा देना चाहता है क्योंकि वह इस विशेष व्यक्ति पर कोई प्रभाव नहीं डालना चाहता है।

अब यह एक संभावना है. तो हम इस तरह की संभावनाओं को किनारे रख देते हैं और कहते हैं, अच्छा, क्या भजन में इस तरह के और भी मामले हैं जो हम देखते हैं? यदि कोई अन्य मामला है, एक या दो मामले हैं, तो हम कह सकते हैं, हाँ, यह एक मजबूत संभावना हो सकती है। यह शायद कुछ ऐसा है जो भजनहार कर रहा है।

इसलिए, फिलहाल हम इसे अपने दिमाग में रखेंगे। यहाँ ये स्पष्टीकरण हैं। यह या तो काव्यात्मक संक्षिप्त रूप है या कोरह के नाम का संरक्षण, कोरह के नाम की पवित्रता।

इसलिए, हम उन दो बातों को ध्यान में रखेंगे और आगे बढ़ेंगे और पहले मध्यस्थता नोट को देखेंगे जिसमें मूसा मध्यस्थता करता है। उन्होंने होरेब में एक बछड़ा बनाया, और ढली हुई मूरत की पूजा की। इस प्रकार, उन्होंने अपनी महिमा को बैल की छवि से बदल दिया।

यहां इस पाठ को देखने से स्पष्ट रूप से सुनहरे बछड़े की पूजा का उल्लेख है। यह तब था जब वे पहली बार मिस्र से बाहर आए थे और यह बटेर से पहले था, जिसे हम पहले ही देख चुके हैं। तो, भजन 78 की तरह, इस विशेष लेखक को बाइबिल पाठ की अनुक्रमणिका के बारे में बिल्कुल भी परवाह नहीं है।

वह अपनी बात पढ़ा रहे हैं. वह अपना भजन, अपनी रचना स्वयं बना रहा है, और चीज़ों का क्रम बाधित हो गया है। लेकिन यह ठीक है।

भजनहार यही करते हैं। कालक्रम का मुद्दा हमारा है और हमें वास्तव में इस पर काबू पाने की जरूरत है। याद न रखने पर, यह श्लोक सात से जुड़ा है।

बाप-दादों को याद नहीं रहा। भजनहार की योजना के लिए याद रखना और भूलना महत्वपूर्ण हैं। स्मरण करने से स्पष्टतः आज्ञाकारिता होती है, भूलने से अवज्ञा होती है।

इसलिए भजनकार आशा कर रहा है कि चूँकि वह इन सभी बातों को याद कर रहा है, इसलिए निर्वासन में उसकी पीढ़ी को ईश्वर के लाभ प्राप्त होंगे, उन लोगों के विपरीत जो बहुत पहले भूल गए थे, जो रेगिस्तानी पीढ़ी की बात करता है। मैंने पहले मूसा के मध्यस्थ के रूप में प्रकट होने का उल्लेख किया था। पाप के बावजूद, क्या मूसा, उसका चुना हुआ, उसके सामने दरार में खड़ा नहीं हुआ था और उन्हें नष्ट करने से अपना क्रोध नहीं रोका था।

तो यहाँ हमारे पास है, और कोई अन्य निर्गमन भजन ऐसा नहीं करता है, मूसा, किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में नहीं जो विपत्तियाँ लाता है, किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में नहीं जो समुद्र को विभाजित करता है, बल्कि एक मध्यस्थ के रूप में। हमारे पास यहां जो कुछ है वह निर्गमन परंपरा का एक उदाहरण है जहां एक व्यक्ति राष्ट्र के लिए ईश्वर के क्रोध को दूर करने में सक्षम है। भजनहार इस उदाहरण को सामने लाने के लिए बहुत उत्सुक है क्योंकि वह बिल्कुल उसी स्थिति में खड़ा है।

वह निर्वासन में है, एक आदमी, और वह राष्ट्र के लिए भगवान के क्रोध को दूर करने की उम्मीद कर रहा है। तो, इस विशेष उदाहरण को सामने लाने पर, हम देख सकते हैं, वाह, वह खुद को उस उदाहरण में मूसा के रूप में देखता है। मैं यह भी कहूंगा, हमने पहले कोरह के बारे में बात

की थी, और कोरह को छोड़ने की संभावना के बारे में बात की थी क्योंकि वे उस पर कोई प्रभाव नहीं डालना चाहते थे।

उन्होंने होरेब में एक बछड़ा बनाया। वास्तव में बछड़ा किसने बनाया? खैर, यह हारून था। यहाँ कहीं भी हारून का उल्लेख नहीं है।

फिर, क्या यह हारून के नाम की रक्षा करने की कोशिश करने और उसे इनमें से किसी भी कार्यवाही में शामिल न करने का एक और सवाल है? यदि आप एक्सोडस में वास्तविक पाठ को देखते हैं, तो यह स्पष्ट रूप से हारून है जिसने गलत काम किया है, उसके कहने और उसके बहाने के बावजूद, मैंने बस यह सोना अंदर फेंक दिया और यह बाहर आ गया। यह हारून ही था जिसने मूल रूप से इसमें उनका नेतृत्व किया। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है मानो भजनकार उस पर कोई नकारात्मक शर्मिंदगी नहीं डालना चाहता।

वह स्पष्ट रूप से इज़राइल के शुरुआती नेताओं के प्रति बहुत सम्मान रखते हैं। हमें यहां किसी चीज़ का एक उदाहरण मिला है, एक ऐसी घटना जिसका मैं संक्षेप में उल्लेख करना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि यह एक पाठ-महत्वपूर्ण मुद्दा है, लेकिन फिर भी मैं इसका उल्लेख करूँगा।

हमें यहां न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड, न्यू इंटरनेशनल वर्जन, न्यू लिविंग ट्रांसलेशन मिला है, इसमें कहा गया है, उन्होंने घास खाते हुए बैल की छवि के लिए अपनी महिमा का आदान-प्रदान किया। ईएसवी में, यह कहा गया है, उन्होंने घास खाने वाले बैल की छवि के लिए भगवान की महिमा का आदान-प्रदान किया। यहां जो चल रहा है उसमें एक सूक्ष्म परिवर्तन है।

यह ईएसवी से है। यहां जो चल रहा है वह यह है कि यह उदाहरणों में से एक है, मुझे लगता है, टिकुन हा- सोफ्रिम नामक घटना के 18 मामलों में से, जो कि शास्त्रियों का सुधार है। और यहाँ, मुझे यह देखकर खुशी हुई कि मेरी हिब्रू संरक्षित है।

लेकिन यहां, केवोदम, यहां इस शब्द का अर्थ उनकी महिमा है। पाठ में यही लिखा है। इसका अनुवाद इसी प्रकार किया गया है।

लेकिन शास्त्री जानते हैं और व्याख्याता जानते हैं कि मूल वाचन केवोदम है, उसकी महिमा। तो यहां कुछ लिपिबद्ध प्रतिपादनों में जो होता है, और यह अन्य स्थानों पर भी एक ज्ञात घटना है, वह केवोदम है, उसकी महिमा अधिक सही है। परन्तु वे ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहते जिससे परमेश्वर का नाम अपवित्र हो।

इसलिए वे इसमें सीधे तौर पर ईश्वर को शामिल नहीं करना चाहते। इसलिए यह कहने के बजाय कि, उन्होंने उसकी महिमा को एक बैल की छवि में बदल दिया, उन्होंने इसे यह कहने के लिए बदल दिया कि उन्होंने अपनी महिमा को एक बैल की छवि में बदल दिया। इस प्रकार की बात, न केवल टिकुन हा- सोफ्रिम, बल्कि यह विचार कि एक मुंशी, या लेखक ईश्वर को संरक्षित करने या बाइबिल के किसी चित्र को संरक्षित करने के लिए कुछ बदल देगा, किसी भी तरह से अजीब नहीं है।

वास्तव में बाइबल इससे अटी पड़ी है। मैं अन्य उदाहरणों में जा सकता हूं। यदि आप अय्यूब की पुस्तक को देखें, तो यह बात अभी मेरे दिमाग में सबसे ऊपर आती है।

आप पाएंगे कि जब अय्यूब अपनी शुरुआती बीमारी से जूझ रहा होता है, तो उसकी पत्नी उससे कहती है, और आपके अंग्रेजी अनुवाद पढ़ेंगे, आप पवित्र को श्राप क्यों नहीं देते, भगवान को श्राप क्यों नहीं देते और मर जाते? लेकिन हिब्रू उसे नहीं पढ़ता। हिब्रू वास्तव में कहता है, तुम भगवान को आशीर्वाद क्यों नहीं देते और मर जाते हो? आप ईश्वर को वस्तु मानकर श्राप नहीं कह सकते, चास वी'शालोम । वह भयानक है।

यह कहना एक भयानक बात है। तो, आप भगवान के नाम की पवित्रता को बनाए रखने के लिए शब्दों को बदल दें। यह कुछ इसी प्रकार की बात है।

इस तरह के कम से कम 18 सुधार मौजूद हैं, लेकिन मुझे यकीन है कि एक पाठ्य आलोचना होगी, वीडियो की एक श्रृंखला जो उस सामग्री को कवर करने में सक्षम होगी। श्लोक 24-27, उन्होंने उतरने से इनकार कर दिया। यहां हमारे पास कादेश की घटना है, जो संख्या 14 का संकेत है, पहली असफल विजय जहां भगवान उन्हें भूमि में जाने के लिए कहते हैं।

वे इसकी जासूसी करते हैं और फिर 10 जासूस इस नकारात्मक रिपोर्ट के साथ वापस आते हैं। हालाँकि, ध्यान दें कि भजन चीजों को थोड़ा बदल देता है। भजन में कहा गया है, इसलिथे उस ने उन से शपथ खाई, कि वह उन्हें जंगल में फेंक देगा।

उसने किया। परमेश्वर ने कहा, 40 वर्ष तक इस पीढ़ी में से कोई भी भूमि देखने वाला नहीं है। तुम रेगिस्तान में मरने वाले हो।

अगली पीढ़ी अंदर जाएगी। वह उनके बीज राष्ट्रों के बीच फेंकेगा और उन्हें भूमि में बिखेर देगा। संख्याओं की पुस्तक में इसका कहीं भी उल्लेख नहीं है।

तो यह वास्तव में कहां से आ रहा है? खैर, राष्ट्रों के बीच अपना बीज बोने का विचार भजनकार के लिए बहुत वास्तविक है क्योंकि वह निर्वासन में बैठा है। वह बेबीलोन में बैठा है। वह उत्तरी राज्य की हानि के विनाश के बाद भी बैठा है, जहां वे बिखरे हुए हैं।

तो, हम इसे भजनहार के साथ एक बार फिर से देखते हैं, यह एक तरह से रेगिस्तान की पीढ़ियों के साथ जो कुछ हो रहा है उसे उसकी पीढ़ी के साथ और उस स्थिति को विलय करने जैसा है जिससे वह भी गुजर रहा है। अगले सत्र में, हमारे पास यहां बहुत सारा पाठ है और साथ ही यह एक वीडियो भी है, लेकिन हमारे पास संकेत है। मैं आपको कुछ शाब्दिक संबंध दिखाना चाहता था।

वे स्वयं को बाल पोर से भी जोड़ते हैं। अतः इस्राएल बाल पोर में सम्मिलित हो गया। मृतकों को आठ बलि दी जाती है और यहाँ यह सिर्फ उनके देवताओं की बलि है।

तो, यह इसे थोड़ा बदल देता है, लेकिन आप यहां इन दोनों ग्रंथों और प्लेग के अंत के बीच एक स्पष्ट संबंध देख सकते हैं। इस प्रकार, विपत्ति रुक गई और इस प्रकार इस्राएल के पुत्रों पर विपत्ति रुक गई। फिर, आप शायद पाएंगे कि यह वही शब्द है जिसे कॉपी नहीं किया गया है।

वह एक और कहानी है. तो, आपको इस पाठ का संख्या 20.25 और फिनीस की हिमायत से स्पष्ट संबंध मिल गया है। भजनहार ने इसमें एक अतिरिक्त योगदान दिया है, मृतकों के लिए आठ बलिदान चढ़ाए गए हैं।

क्या यह सिर्फ अतिशयोक्ति का प्रश्न है? क्या वह अब यह उल्लेख कर रहे हैं, बोल रहे हैं कि इन लोगों की मूर्तियाँ या देवता मर चुके हैं और बेकार हैं, जो कि मामला भी हो सकता है। लेकिन हमें कुछ और भी मिलता है, मुझे लगता है कि मेरे लिए अधिक दिलचस्प वह व्याख्या का स्तर है जो वह रखता है। भजनहार यहाँ कहता है, और उन में मरी फैल गई।

यदि आप संख्याओं की पुस्तक के स्रोत पर जाएं, तो शायद मैं यहां कुछ स्लाइडों को पलट दूंगा। यहाँ, संख्याओं की पुस्तक में हमारे पास केवल प्लेग के अंत का वर्णन है। इस प्रकार, इस्राएल के पुत्रों पर विपत्ति रुक गई।

हमारे पास नंबरर्स में ऐसा कोई शब्द नहीं है जो बताता हो कि नंबरर्स में कभी कोई प्लेग फैला हो। तो, यह कुछ ऐसा है जिसे भजनहार ने अपनी कहानी के प्रस्तुतिकरण में संबोधित किया है जहां वह वास्तव में समझाता है, हां, इस बिंदु पर, एक प्लेग फैल गया था। इस परिच्छेद में भी, हम एक अन्य मध्यस्थ, फिनीस को देखते हैं, जो निर्गमन स्तोत्रों में से किसी में एकमात्र उपस्थिति है।

मूसा की तरह, वह पूरे राष्ट्र के लिए मध्यस्थता करने वाले एक व्यक्ति के रूप में खड़ा है। उनके नेक कार्य के कारण राष्ट्र बच गया। यह सचमुच महत्वपूर्ण है।

फिर, यह दूसरी बार है जब हम इसे देख रहे हैं क्योंकि भजनहार खुद को उस मॉडल में देख रहा है। वह वही एक व्यक्ति है. वह उसकी हिमायत की प्रार्थना है।

वह उम्मीद कर रहा है कि जिस तरह भगवान ने अतीत में इसका सम्मान किया था, वह फिर से ऐसा कर सकता है। एक व्यक्ति परमेश्वर के क्रोध को दूर करने के लिए उसके सामने खड़ा हो सकता है। इसके परिणामस्वरूप, हम फिनीस के इस अद्भुत उत्कर्ष को देखते हैं।

यह कहता है कि यह उसके लिये पीढ़ी पीढ़ी तक सर्वदा के लिये धार्मिकता गिना गया। बाइबिल के पाठ में नहीं, लेकिन उन लोगों के लिए जो पवित्रशास्त्र को जानते हैं, और यह स्पष्ट है कि भजनकार भी जानता है, इसमें स्पष्ट रूप से इब्राहीम का संकेत है। तब उस ने यहोवा पर विश्वास किया, और उस ने इसे धर्म समझा।

इसलिए फिनीस को ऊंचा किया जा रहा है और उसे इसराइल के पूर्वजों में से एक अब्राहम के बराबर ऊंचे और ऊंचे स्थान पर रखा गया है। प्रश्न यह है कि क्या भजनहार स्वयं इस बारे में सोच रहा है? क्या वह देख रहा है कि यदि मैं ऐसा करूँ तो क्या मेरी इतनी महिमा हो जायेगी? या यदि मैं फिनीस जैसा ही कार्य करता हूँ तो क्या मैं स्वयं को उतना ही धर्मी मानता हूँ? लेकिन यह इस

विशेष बिंदु पर संकेत का एक बहुत ही जानबूझकर किया गया कार्य है। लेकिन इसे प्राप्त करने के लिए, आपको स्वयं कुछ पवित्रशास्त्र जानने की आवश्यकता है।

मरीबा के सोते के पास जाएंगे जहां इस्राएलियों ने परमेश्वर को क्रोध दिलाया था। यहां संख्या 21 से 13 तक मामला है। मैंने कहा, जवाबदेही में एक सूक्ष्म बदलाव है।

मरीबा के जल पर, मूसा को एक काम करने के लिए कहा गया था। उसने कुछ अलग किया और भगवान का नाम अपवित्र हो गया। इसे इस्राएलियों के बीच पवित्र नहीं बनाया गया था।

परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने मूसा को दंडित किया। यहाँ जवाबदेही इस्राएलियों के कंधों पर पड़ती प्रतीत होती है। यह कहता है, कि क्योंकि वे उसकी आत्मा के विरुद्ध बलवा करते थे, इसलिए वह अपने होठों से उतावलेपन से बोलता था।

यह उनकी गलती है। वह बस भगवान की इच्छा पूरी करने की कोशिश कर रहा है। वे उसे इस स्थान पर धकेल देते हैं जहां उसे अपने होठों से बिना सोचे-समझे बोलना पड़ता है और इसलिए, उसे दंडित किया जाता है।

तो, भजनहार इस विशेष मामले में मूसा को यह कहकर छूट दे रहा है, हाँ, उसने वह नहीं किया जो सही था, लेकिन फिर भी यह उनकी गलती थी। यहाँ हम बस यह देखते हैं कि संख्याएँ याद दिलाती हैं कि मूसा ने ईश्वर की अवज्ञा की थी। भजनकार उस विशेष कार्रवाई में लोगों की ज़िम्मेदारी को याद करता है।

इसलिए, हम देश में पाप और दंड के एक चक्र की ओर बढ़ रहे हैं, जिसमें हम देखते हैं कि बाइबिल से, हिब्रू धर्मग्रंथों से विशिष्ट अंशों का पता लगाना बहुत मुश्किल है। यह इस्राएलियों द्वारा भूमि और राजशाही पर कब्ज़ा करने के बाद की बात करता है। संभवतः इसमें बच्चों की बलि भी शामिल है।

यहाँ तक कि वे अपने पुत्रों और पुत्रियों की भी राक्षसों को बलि चढ़ा देते हैं। क्या यह मनश्शे की ओर संकेत है जिसने अपने बेटे को आग के बीच से गुजारा और उसे बलिदान कर दिया? उसने जो किया उसके परिणामस्वरूप, राजाओं के अनुसार, वैसे भी इस्राएली निर्वासन के लिए नियत थे। लेकिन इस सब के बावजूद, इस खंड का अंत, इसके साथ समाप्त होता है, उसने उन्हें उनके सभी बंधकों की उपस्थिति में अपनी करुणा का पात्र भी बनाया।

हम इस खंड में अपने लोगों के प्रति ईश्वर की करुणा के बारे में एक समापन वक्तव्य देखते हैं। इसलिए भले ही उन्होंने पाप किया और उन्हें इसके लिए दंडित किया गया, भगवान अपने लोगों के प्रति दयालु बने रहे। तो, आइए इसे शीघ्रता से संक्षेप में प्रस्तुत करें।

भजन 106 में निर्गमन एक इकबालिया प्रार्थना है। यह बाकी सभी से अलग है। इसका उपयोग पापों को स्वीकार करने और यहां तक कि राष्ट्र के लिए हस्तक्षेप करने के लिए भी किया जाता है।

मध्यस्थता को उजागर करने वाले दो खंड मूसा और फिनीस थे। विशेष रूप से यदि आप कभी भी इन वीडियो को एक साथ देखते हैं, तो आप देख पाएंगे कि व्यक्तियों को इतना धार्मिक, मानवीय व्यक्ति के रूप में चित्रित करना और साथ ही जो काम वे कर रहे हैं उसमें इतना सक्रिय होना बहुत अजीब है। तो यह बहुत ही अलग दिखता है।

मध्यस्थ के रूप में खड़े इन दो व्यक्तियों का यह प्रश्न भजनकार के मामले पर प्रकाश डालता है जब वह कहता है, हे प्रभु, अपनी प्रजा पर अपनी कृपादृष्टि करके मुझे स्मरण कर। इस प्रकार, भजनहार स्वयं को उन व्यक्तियों के साथ जोड़कर कहता है, उसी प्रकार, तुमने उन्हें याद किया और तुमने राष्ट्र का उद्धार किया। अब कृपया मेरे साथ भी वैसा ही करें।

और बस उस अनुभाग को समाप्त करते हुए, हम उसके बारे में बात करने जा रहे हैं। मैं फिर से इस बात पर प्रकाश डाल सकता हूँ कि व्यक्तियों द्वारा ये सक्रिय भूमिकाएं भजन और पवित्रशास्त्र के पुनः उपयोग के बीच दुर्लभ हैं। मैं अभी कुछ और स्लाइड देखना चाहता हूँ।

उनमें से एक भजन है, 106 और 107 के बीच संबंध। हमने एक्सोडस भजन के आकर्षण के बारे में बात की और यह सिर्फ एक तरीका था जिसमें समान सामग्री ने भजन के संपादकों को आकर्षित किया है। लेकिन मैं इतना ही कहूंगा।

ऐसे अन्य कारण भी हैं जिनकी वजह से भजनों को एक साथ रखा जाता है। यदि आप भजन 106 के अंत को देखें, तो यह कहता है, हे हमारे परमेश्वर यहोवा, हमें बचा, और हमें राष्ट्रों के बीच से इकट्ठा कर। भजनहार निर्वासन में है।

वह कह रहा है, कृपया हमारी मदद करें। मुझे नहीं लगता कि यह संयोग से है कि निम्नलिखित भजन की शुरुआत में कहा गया है, प्रभु के छुड़ाए हुए लोग ऐसा कहें, जिन्हें उसने विपत्ति के हाथ से छुड़ाया है और देशों से, पूर्व से और पश्चिम से इकट्ठा किया है, उत्तर से और दक्षिण से, राष्ट्रों के बीच से। तो, निश्चित रूप से ऐसा लगता है जैसे किसी ने इन दो भजनों को एक साथ रखा है, जहां एक मदद के लिए अनुरोध है।

अब एक संपादक इन भजनों की तुलना करके कह सकता है, हां, भगवान ने इस प्रार्थना का उत्तर दिया है और उसने हमें राष्ट्रों के बीच बिखरने से बचाया है। तो, हम इस तरह की बातचीत देखते हैं जो इन दो भजनों के बीच चल रही है, जो आगे चलकर भजन की व्यवस्था में संपादकों और संपादकों के संज्ञान को उजागर करती है। आखिरी बात जो मैं इस स्तोत्र के संबंध में कहना चाहता हूँ, ठीक है, इस स्तोत्र की स्थिति के संबंध में वह यह है कि यह चौथी पुस्तक के अंत में आता है।

मैंने पहले उल्लेख किया है, कि भजन के बिल्कुल अंत में एक स्तुतिगान है, जिसका अर्थ है कि यह चौथी पुस्तक को बंद कर देता है। स्तोत्र की चौथी पुस्तक में भजन 90 से 106 शामिल हैं। इसके चरित्र के कारण, इसे अक्सर मूसा की पुस्तक कहा गया है।

इसे मूसा की किताब क्यों कहा जाता है? खैर, एक कारण यह है कि भजनों के इस समूह का आरंभ परमेश्वर के जन मूसा की प्रार्थना से शुरू होता है, यह एकमात्र भजन है जिसके लेखक के

रूप में मूसा को जिम्मेदार ठहराया गया है। दूसरा कारण यह है कि स्तोत्र में मूसा का नाम आठ बार में से सात बार इस विशेष पुस्तक में है। दूसरी बार यह भजन 77 में दिखाई देता है और इस बात पर विवाद है कि क्या यह भजन में बाद में जोड़ा गया था।

यदि आप अन्य भाषाओं में पहले की अन्य पांडुलिपियों को देखें, तो आपको इस बात के प्रमाण मिलेंगे कि मूसा वास्तव में उस स्तोत्र का मूल नहीं था। इसलिए, अधिकांश घटनाएँ स्तोत्र के इस विशेष खंड में दिखाई देती हैं। हमारे पास रेगिस्तानी विषय भी है, भजन 95, 106, और 106 सभी भजनों की इस छोटी सी सघनता में पाए जाते हैं।

यह एक समय था और यह वह काल था जिसमें मूसा इस्राएल का नेता था। साथ ही, हम यहां पाते हैं कि इन भजनों में ईश्वर ही राजा है का विषय है। भजन 95 से 99 तक हमारे पास वाक्यांश है, या तो प्रभु शासन करता है या ईश्वर राजा है या वह शासन करता है, या उन विशेष भजनों में ऐसा ही कुछ है।

यह सब मिलकर एक विशेष समय की ओर इशारा करते हैं जब दाऊद इस्राएल का राजा नहीं था, बल्कि परमेश्वर उनका राजा था। यह भजन 136 में परिलक्षित होता है जिसमें भगवान ने एक राजा के रूप में अन्य राजाओं, फिरौन, ओग और सीहोन के खिलाफ लड़ाई में उन्हें हराने का काम किया। इस प्रकार भजन 136 समाप्त होता है।

हमें एक और काम करना है, जो कि भजन 106 समाप्त हो गया है। हमें आगे 135 काम करने हैं।

यह निर्गमन स्तोत्रों पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड एमानुएल हैं। यह सत्र संख्या चार, भजन 106, अंतराल में खड़ा है।